इस माला में अब तक प्रकाशित हिन्दी पुस्तिकाएँ

लक्ष्मीनाथ बेजबरुआ : हेम बरुआ / **बंकिमचन्द्र चटर्जी** : सुबोधचन्द्र सेनगुप्त / **बुद्धदेव बसु** : अलोकरंजन दासगुप्त / **चण्डीदास** : सुकुमार सेन / **ईश्वरचन्द्र विद्यासागर** : हिरण्मय बनर्जी/**जीवनानन्द दास** : चिदानन्द दासगुप्त/**काजी नजरुल इस्लाम** : गोपाल हाल्दार / **महर्षि देवेन्द्रनाथ ठाकुर** : नारायण चौधुरी / **माणिक बन्द्योपाध्याय** : सरोजमोहन मित्र / **माइकल मधुसूदन दत्त** : अमलेन्दु बोस / **प्रमथ चौधुरी** : अरुणकुमार मुखोपाध्याय / **राज' राममोहन राय** : सौम्येन्द्रनाथ टैगोर / **ताराशंकर बन्द्योपाध्याय** : महाश्वेता देवी / **सरोजिनी नायडू** : पद्मिनी सेनगुप्त / **तरुदत्त** : पद्मिनी सेनगुप्त / **गोवर्धनराम** : रमणलाल जोशी / **मेघाणी** : वसन्तराव जटाशंकर त्रिवेदी / **नानालाल** : उमेदभाई मणियार / **नर्मदाशंकर** : गुलाबदास ब्रोकर / **भारतेन्दु हरिश्चन्द्र** : मदन गोपाल / **बिहारी** : बच्चन सिंह / **देवकीनन्दन खत्री** : मधुरेश / **घनानन्द** : लल्लन राय / **जयशंकर प्रसाद** : रमेशचन्द्र शाह / **महावीरप्रसाद द्विवेदी** : नन्दकिशोर नवल / **जायसी** : परमानन्द श्रीवास्तव/ **प्रेमचन्द** : प्रकाशचन्द्र गुप्त /**राहुल सांकृत्यायन** : प्रभाकर माचवे/**रैदास** : धर्मपाल मैनी / **श्यामसुन्दरदास** : सुधाकर पाण्डेय / **सुभद्रा कुमारी चौहान** : सुधा चौहान / **बी० एम० श्रीकंठय्य** : ए० एन० मूर्तिराव / **बसवेश्वर** : एच० थिप्पेरुद्रस्वामी/ **विद्यापति** : रमानाथ झा/**ए० आर० राजराज वर्मा** : के० एम० जॉर्ज/ **चन्दु मेनन** : टी० सी० शंकर मेनन / **कुमारन् आशान** : के० एम० जॉर्ज / **महाकवि उल्लूर** सुकुमार अषिकोड / **वल्लत्तोल** : बी० हृदयकुमारी / **दत्तकवि** : अनुराधा पोत्दार/ **ज्ञानदेव** : पुरुषोत्तम यशवन्त देशपाण्डे / **हरि नारायण आपटे** : रामचन्द्र भिकाजी जोशी / **केशवसुत** : प्रभाकर माचवे / **नामदेव** : माधव गोपाल देशमुख / **नरसिंह चिन्तामण केलकर** : रामचन्द्र माधव गोले / **श्रीपाद कृष्ण कोल्हटकर** : मनोहर लक्ष्मण वराडपांडे / **तुकाराम** : भालचन्द्र नेमाड़े/ **फकीरमोहन सेनापति** : मायाधर मानसिंह / **राधानाथ राय** : गोपीनाथ महन्ती / **सरलादास** : कृष्णचन्द्र पाणिग्राही/ **भाई वीर सिंह** : हरबंस सिंह / **जाम्भोजी** : हीरालाल माहेश्वरी / **मुँहता नैणसी** : बृजमोहन जावलिया /**सूर्यमल्ल मिश्रण** : विष्णुदत्त शर्मा/**बाणभट्ट** : के० कृष्णमूर्ति/ **भवभूति** : गो० के० भट /**जयदेव** : सुनीतिकुमार चटर्जी / **कल्हण** : सोमनाथ धर / **माघ कवि** : चण्डिकाप्रसाद शुक्ल/ **सचल सरमस्त** : कल्याण बू० आडवाणी / **शाह लतीफ़** : कल्याण बू० आडवाणी / **भारती** : प्रेमा नन्दकुमार / **इलंगो अडिगल** : मु०वरदराजन / **कम्बन** : एस० महाराजन/**माणिक्कवाचकर** : जी० वंमीकनाथन/ **पोतन्ना** : दिवाकर्ल वेंकटावधानी / **वेदम वेंकटराय शास्त्री** : वेदम वेंकटराय शास्त्री (कनिष्ठ) / **गुरजाड** : नार्ल वेंकटेश्वर राव/ **वीरेशलिंगम्** : नार्ल वेंकटेश्वर राव / **वेमना** : नार्ल वेंकटेश्वर राव / **गालिब** : मु० मुजीब ।

महर्षि देवेन्द्रनाथ ठाकुर

नारायण चौधुरी

भारतीय साहित्य के निर्माता

महर्षि देवेन्द्रनाथ ठाकुर

भारतीय साहित्य के निर्माता

महर्षि देवेन्द्रनाथ ठाकुर

लेखक
नारायण चौधुरी

अनुवादक
गिरधर राठी

साहित्य अकादेमी

Maharshi Devendranath Thakur : Hindi translation by Girdhar Rathi of Narayan Chaudhary's monograph in English, Sahitya Akademi, New Delhi, Second Printing (1983).

SAHITYA AKADEMI
REVISED PRICE Rs. 15-00

© साहित्य अकादेमी

प्रथम संस्करण : १९७८
द्वितीय आवृत्ति : १९८३

साहित्य अकादेमी

प्रधान कार्यालय

रवीन्द्र भवन, ३५, फ़ीरोज़शाह रोड, नई दिल्ली ११०००१

क्षेत्रीय कार्यालय

ब्लाक V-बी, रवीन्द्र सरोवर स्टेडियम, कलकत्ता ७०००२९

२९, एल्डाम्स रोड (द्वितीय मंज़िल), तेनामपेट, मद्रास ६०००१८

१७२, मुम्बई मराठी ग्रन्थ संग्रहालय मार्ग, दादर, बम्बई ४०००१४

मूल्य :

SAHITYA AKADEMI
REVISED PRICE Rs. 15-00

मुद्रक :
भारती प्रिण्टर्स,
दिल्ली ११००३२

अनुक्रम

प्रस्तावना	७
जन्म तथा आरंभिक जीवन	११
धर्म के पथ पर	१७
संकट	२४
नयी दृष्टि	३०
अंतराल	३६
ब्रह्मो आन्दोलन में फूट	४३
जीवन का उत्तरार्द्ध	४६
साहित्यिक मूल्यांकन	५०
परिशिष्ट	
कुछ महत्त्वपूर्ण तिथियाँ और घटनाएँ	५७
ग्रंथ-सूची	६१
देवेन्द्रनाथ के संबंध में पुस्तकें	६३

प्रस्तावना

महर्षि देवेन्द्रनाथ ठाकुर मूलतः एक धार्मिक नेता थे। बाङ्ला साहित्य को उनका अवदान एक तरह से उनका गौण कार्य था, क्योंकि अपने धार्मिक विचारों को सुचिंतित भाषा में और सुसंगत पद्धति से स्थापित करने की प्रक्रिया में ही उस साहित्य की रचना हुई थी। वस्तुतः उनका साहित्यिक जीवन (यदि हम स्वीकृत अर्थ में इस मुहावरे का प्रयोग करें) उनके धार्मिक जीवन का अभिन्न अंग था। वे धर्मप्राण थे—उनका जीवन, आचरण और अस्तित्व, सभी कुछ धर्म में था। उन जैसे एक-दो अन्य लोगों को छोड़ उन्नीसवीं शताब्दी के बंगाल के समूचे धार्मिक इतिहास में उन जैसा ईश्वर-भक्त नहीं मिलेगा।

देवेन्द्रनाथ उस 'धार्मिक सुधार-युग' की एक सर्वश्रेष्ठ उपज थे जो कि इस देश में ब्रिटिश हुकूमत के आने के बाद पूरे बंगाल में छाये सर्वांगीण पुनरुत्थान का ही अंग था। बंगाल पश्चिमी—अच्छे और बुरे—प्रभावों को सबसे पहले झेलने वाले भारतीय प्रांतों में प्रथम था; इस पारस्परिक संपर्क से जन्म लेने वाले अच्छे प्रभावों में शायद उपर्युक्त पुनर्जागरण या नवजागरण ही सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण घटना थी। राजा राममोहन राय इसके अग्रदूत थे जिन्होंने अनेक क्षेत्रों—धार्मिक सामाजिक, शैक्षिक इत्यादि—में नई शुरुआतें की थीं। महर्षि देवेन्द्रनाथ राममोहन राय के सीधे उत्तराधिकारी थे और अपने उस विख्यात अग्रज के अधूरे कार्य को, विशेष रूप से धार्मिक सुधार के क्षेत्र में, उन्होंने ही आगे बढ़ाया। ऐतिहासिक रूप से वे राजा राममोहन राय के युग तथा अपने परवर्ती धार्मिक नेताओं के दल के बीच की कड़ी थे। हालाँकि महर्षि अनेक क्षेत्रों में सक्रिय थे, पर धर्म ही उनका मूल प्रेरक तथा उनकी समस्त गतिविधियों का केंद्र था। इसलिए उनकी शक्ति और प्रतिभा का अधिकांश केवल धर्म की दिशा में प्रवाहित हुआ।

अस्तु, यदि हमें देवेन्द्रनाथ के साहित्यिक अवदान का आकलन करना हो तो हमें उनके धार्मिक व्यक्तित्व के मूल्यांकन के संदर्भ में ही यह प्रयत्न करना पड़ेगा। सच तो यह है कि इन दोनों वस्तुओं को अलग-अलग नहीं परखा जा सकता। ये दोनों इस तरह अन्योन्याश्रित हैं कि उनके साहित्यिक सर्जन के गुणावगुण पर विचार शुरू करते ही हम उनकी आध्यात्मिक यात्राओं के क्षेत्रों में जा पहुँचते हैं। क्योंकि देवेन्द्रनाथ ने जो कुछ लिखा या कहा है वह हमेशा उनके धार्मिक अनुभवों—उनके आंतरिक जीवन के ईश्वर से तादात्म्य-स्थापना में उनके आध्यात्मिक अंतर्द्वंद्वों और क्लेशों के अनुभवों—की व्याख्या के रूप में ही है। उनकी सारी रचनाओं

में उनकी 'आत्मजीवनी' निस्संदेह सर्वश्रेष्ठ है। पर यह भी वस्तुतः उनके ईश्वर-लीन व्यक्तित्व की गहरी आकांक्षाओं और उमंगों का ही खरा और सच्चा चित्रण मात्र है। उनकी एक अन्य उल्लेख्य पुस्तक 'ब्रह्मो धर्मेर व्याख्यान' के नाम से ही उसके स्वरूप का संकेत मिल जाता है। ब्रह्म समाज के आचार्य के रूप में उन्होंने १८६१-६२ में व्याख्यान दिए थे, यह उन्हीं का संकलन है। इन कुल ३७ व्याख्यानों में उनकी विख्यात कृति 'ब्रह्मोधर्म'में संकलित अपेक्षाकृत गूढ़ श्लोकों के महत्त्व का प्रतिपादन किया गया है; और 'ब्रह्मोधर्म' भारत के पुरातन ग्रंथों में प्राप्य पवित्रतम, उदात्ततम तथा परम आत्मोन्नायक विचारों का भंडार है। उनकी अन्य पुस्तकें भी कमोबेश इन्हीं दृष्टियों और दृष्टिकोणों को लिये हुए हैं। यथास्थान मैं उनका उल्लेख करूँगा।

अस्तु हम देखेंगे कि साहित्यकार के रूप में देवेन्द्रनाथ के गुणों और वैशिष्ट्यों का आकलन स्वभावतः ही 'दिव्य ज्योति' और 'सत्य' के अनुसंधाता के रूप में उनके जीवनगत प्रवास को समझने की प्रक्रिया से जुड़ा हुआ है। इसी जीवन में, उपनिषदों तथा अन्य संस्कृत ग्रंथों में पुरातन ऋषियों द्वारा वर्णित सनातन सत्यों को साकार करना, यही उनकी गवेषणा थी, और उनका साहित्य मूलतः उसी गवेषणा की कथा का पुनराख्यान था। पुरातन भारत के ज्ञान का सारतत्त्व मानो देवेन्द्रनाथ की रचनाओं में एक आधुनिक भूषा और आधुनिक शैली में प्रस्तुत हुआ था।

पर यदि देवेन्द्रनाथ का समूचा व्यक्तित्व धर्म से आप्लावित था, उसकी सर्व-ग्राही ज्वाला में घिरा हुआ था, तो उन्हें मात्र एक धर्मप्राण संपूर्ण व्यक्तित्व के रूप में परखने की बजाय उनके साहित्यिक सामर्थ्य पर अलग से ध्यान देने की वास्तव में कोई आवश्यकता भी है? भारतीय साहित्य को विभिन्न रूपों में समृद्ध करने वाले व्यक्तित्वों में से एक के रूप में उन पर विचार करने की आवश्यकता ही क्यों हो? लेखक के रूप में उनकी विशिष्ट अद्वितीयता क्या है?

इन प्रश्नों का उत्तर यह है: मूलतः और निश्चित रूप से धर्मान्वेषी होते हुए भी देवेन्द्रनाथ सूखे काठ-से संन्यासी न थे जिन्हें सौंदर्य या जीवन की अन्य अच्छी वस्तुओं का अहसास न हो। वे कलकत्ता के एक सम्पन्न और अभिजात खानदान के सदस्य थे जो कि विविध क्षेत्रों में रुचि लेने के लिए प्रसिद्ध था, बंगाल के सांस्कृतिक जीवन के सभी अग्रगामी आंदोलनों में आगे-आगे रहता था। उनके परिवार—जोड़ासाँको ठाकुरबाड़ी—का कला-प्रेम विख्यात था। वस्तुतः यह आश्चर्य की बात थी कि भव्य परिवेश की चमक-दमक में जन्मे और बड़े हुए देवेन्द्रनाथ ऐन युवावस्था में ईश्वर-आराधक हो गए, और तभी से उन्होंने सांसारिक सुखों का त्याग करना भी परमावश्यक मान लिया। उनके पिता प्रिंस द्वारकानाथ ठाकुर अपने युग में कलकता के एक सबसे धनाढ्य व्यक्ति थे, अपने युग के

सभी अग्रगामी आंदोलनों के उदारमना सहायक थे, राजा राममोहन राय के मित्र और सहयोगी थे और अपने शाही खर्चों के लिए प्रसिद्ध थे। देवेन्द्रनाथ ने बहुत निकट से जीवन के वैविध्य और विपुलता को जाना था; वस्तुतः वह उसके केन्द्र में थे। इसके बावजूद उन्होंने भोग-विलास का यह जीवन छोड़ दिया और चिंतन तथा भजन में लीन हो गये। बाहरी तौर पर उनके सभी सांसारिक तथा घरेलू बंधन यथावत् बने रहे, फिर भी वह अंतर्लीन हो गए; स्वकेन्द्रित व्यक्ति के रूप में नहीं, बल्कि ऐसे व्यक्ति के रूप में जो ईशमय जीवन जिये तथा निरंतर ईश्वर से तदाकार होने की चेष्टा करता रहे।

उनकी आंतरिक खोज का स्वरूप चाहे जो रहा हो, रूप और सौंदर्य के प्रति संवेदनशीलता उन्हें परिवार से विरासत में मिली थी। उनके गद्यलेख को—कुछेक भजन और गीत छोड़कर उन्होंने सभी कुछ गद्य में लिखा है—ध्यान से पढ़ें तो उनकी शैली का सौष्ठव और संतुलन, अभिव्यक्ति की शालीनता और गरिमा, और सर्वाधिक, प्रकृति के सौंदर्यों की गहरी पहचान हमें चमत्कृत कर देती है। उनकी आत्मकथा के अनेक अंश, खासकर बाद का भाग जिसमें उन्होंने अधेड़ आयु में अपने हिमालय-प्रवास के अनुभव चित्रित किए हैं—एकांत और शांति की खोज में—उनके प्रकृति-प्रेम और अनूठी काव्यभाषा के दस्तावेज हैं। 'पत्रावलि' में संकलित उनके कुछ पत्र भी इसीके प्रमाण हैं। यह संयोग मात्र नहीं है कि उनके सबसे समर्थ पुत्र और विश्वविख्यात कवि रवीन्द्रनाथ ठाकुर में उनकी सर्जनशील प्रतिभा के असंख्य गुणों के अलावा यह गुण आजीवन मिलता है कि प्रकृति तथा उसके वैविध्य के प्रति वे अत्यंत सचेत रहे। उनके काव्य के इस गुण का रहस्य भी संभवतः खानदान और विरासत में खोजा जा सकता है।

राममोहन, ईश्वरचंद्र विद्यासागर, अक्षयकुमार दत्त और भूदेव मुखर्जी के साथ देवेन्द्रनाथ को हम बाङ्ला गद्य के शैशव काल में उसके प्रमुख निर्माता के रूप में रख सकते हैं। इस क्षेत्र में उनके अवदान पर विस्तार से चर्चा जरूरी होगी। आगामी अध्यायों में, उन्नीसवीं सदी के आरम्भ में प्रकट हुए इस अद्भुत व्यक्ति के जीवन, अपने बहुमुखी व्यक्तित्व से बंगाली समाज को समृद्ध करने वाले उनके अवदान इत्यादि के अलावा उक्त विषय के भी विवेचन का प्रयत्न किया गया है।

जन्म तथा आरंभिक जीवन

महर्षि देवेन्द्रनाथ ठाकुर का जन्म कलकत्ता में १५ मई, १८१७ को हुआ था। वे जोड़ासाँको ठाकुर खानदान के वंशज प्रिंस द्वारकानाथ ठाकुर के सबसे बड़े बेटे थे। जोड़ासाँको ठाकुर परिवार उन्नीसवीं सदी में बंगाल का एक समृद्धतम तथा अभिजात परिवार था। अपने सौंदर्य और धार्मिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक क्षेत्र में तत्कालीन सभी अग्रगामी आंदोलनों में सहयोग के कारण प्रसिद्ध इस परिवार ने कला और धर्म के क्षेत्र में बंगाल को सर्वोत्कृष्ट सपूत दिए हैं। महर्षि रवीन्द्रनाथ, अवनीन्द्रनाथ इत्यादि उन्हीं में आते हैं। देवेन्द्रनाथ के दो छोटे भाई थे—गिरीन्द्रनाथ और नगेन्द्रनाथ। दो अन्य भाई बचपन में मर गये थे।

पिता द्वारकानाथ हर मामले में एक अद्‌भुत व्यक्तित्व थे। ठाकुर परिवार मुख्यतः जमींदार था। बंगाल में तथा बाहर भी उनकी जायदाद थी। पर द्वारकानाथ अन्य जमींदारों की तरह जमींदारी पर निर्भर तथा संतुष्ट होकर शहरों में विलास करते हुए नहीं रहना चाहते थे। उन्होंने ईस्ट इंडिया कंपनी में नौकरी कर ली और अपने अध्यवसाय एवं बुद्धिमत्ता के जरिये उस कंपनी के वरिष्ठ पद पर पहुँच गये। चौबीस-परगना ज़िले के कलक्टर के तहत वे दीवान और सॉल्ट-एजेंट बन गये। नौकरी में वे और भी ऊँचे पद पर पहुँचते, लेकिन नई शुरुआतों तथा काम से अपने लगाव के कारण वे किसी एक ढर्रे में पराश्रित जीवन नहीं बिता सकते थे। छह वर्ष बाद नौकरी छोड़कर उन्होंने कुछ लोगों के साथ एक नई कंपनी 'कार, टैगोर ऐंड कं०' खोल ली। कई स्थानों पर उन्होंने रेशम की बुनाई शुरू कराई, चीनी के कारखाने लगाये, रानीगंज क्षेत्र में कोयला खानें खरीदीं, और नमक, शीरा, कोयला इत्यादि का बड़े पैमाने पर व्यापार किया। इस तरह उन्होंने अपार धन कमाया और बंगाल तथा उड़ीसा में दूर-दूर तक नई ज़मींदारियाँ खरीदीं। उन्होंने बैंक भी खोले—'यूनियन बैंक' कलकत्ता में पहला बैंक था जिसकी व्यवस्था बंगाली लोगों के हाथ में थी।

लेकिन ये सब कार्य उनकी उपलब्धियों के अंशमात्र हैं। कलकत्ता नगर में अपनी संपत्ति तथा प्रतिष्ठा से उन्हें जो ज़बरदस्त सामाजिक रोब-दाब हासिल हुआ था, उसका उन्होंने सदुपयोग किया। परोपकार और दान-दक्षिणा में उनका कोई सानी नहीं था। विचारों से उदार और राजा राममोहन राय के प्रशंसक मित्र होने के नाते उन्होंने बंगाली समाज में राजा द्वारा सुझाये गये हर सुधार के लिए खुले हाथों आर्थिक सहायता दी। सती-प्रथा की समाप्ति, बंगाल में अंग्रेजी